

ईरान-अमेरिका-इज़रायल युद्ध भारत के तट तक पहुँचा!

अमेरिका की पनडुब्बी ने ईरान के युद्धपोत को, भरत की जल सीमा से 40 किलोमीटर दूर डुबोया, श्रीलंका की जल सेना ने युद्धपोत के 32 नाविकों को डूबने से बचाया तथा 80 नाविक डूब गए

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 मार्च। ईरान-अमेरिका-इज़रायल युद्ध अब खतरनाक रूप से हमारे क्षेत्र के करीब आता जा रहा है। श्रीलंका के तट से लगभग 40 किलोमीटर दूर एक ईरानी युद्धपोत को अमेरिकी पनडुब्बी ने डुबो दिया। जहाज पर सवार लगभग 80 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है और अब तक चालक दल के सदस्यों में से केवल 32 को बचाया जा सका है।

नाटो गठबंधन में भी दरारें दिखाई देने लगी हैं। स्पेन ने ईरान में सैन्य कार्रवाई के लिए अमेरिकी वायुसेना को अपने हवाई अड्डों के उपयोग की अनुमति देने से इनकार कर दिया है। इस इनकार से नाराज होकर ट्रंप ने स्पेन के साथ सभी व्यापारिक संबंध निलंबित करने और डंडात्मक कदम उठाने की धमकी दी है।

इसके साथ ही, यह क्षेत्रीय युद्ध अब मध्य पूर्व से बहुत आगे तक फैल रहा है, क्योंकि ईरानी युद्धपोत युद्ध क्षेत्र से हजारों मील दूर था। सवाल उठता है

- अहम् सवाल है, क्या अमेरिका, यह दुःसाहस पूर्ण आक्रमण करने की हिम्मत दिखाता, अगर, ईरानी युद्धपोत, चीन या रूस की सीमा के इतना ही नज़दीक होता, जितना भारत की जल सीमा के नज़दीक था।
- अमेरिका के रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने प्रैस कॉन्फ्रेंस में छाती ठोकते हुए गर्व से कहा कि अमेरिका यह युद्ध बेरहमी से जीतता जा रहा है और युद्ध के दिनों में “शत्रु” के जहाजों पर आक्रमण करना जायज होता है।
- पर, अहम् सवाल है, युद्धपोत, भारत की जल सीमा में था या अंतर्राष्ट्रीय पानी में।
- विश्व का 20 प्रतिशत ऑयल, स्ट्रेट ऑफ होरमुज़ के जरिए आता-जाता है।
- फिलहाल, स्ट्रेट ऑफ होरमुज़ पर ईरान का आधिपत्य है, अमेरिका दावा कर रहा है कि वो शीघ्र ही इस स्ट्रेट के मार्फत आवागमन सामान्य कर देगा और इस स्ट्रेट के जरिए आवागमन को सुरक्षित करने के लिए अमेरिका की नौ-सेना द्वारा “एस्कॉर्ट” कर देगा।
- फिलहाल ईरान ने टर्कों में नाटो के एयरबेस और कतर में अमेरिका के ठिकानों पर आक्रमण कर दिया है और 1.2 अरब डॉलर का अमेरिका का आधुनिकतम राडार सिस्टम भी नष्ट कर दिया है।

कि क्या अमेरिका ऐसा ही कदम उठाता, यदि यह जहाज चीन या रूस के जलक्षेत्र के पास होता।

चीन और रूस, दोनों देश ईरानी शासन और उसके अस्तित्व के मजबूत

समर्थक हैं। चीन के ईरान में महत्वपूर्ण हित है, क्योंकि चीन ईरानी तेल का बड़ा खरीदार है। ईरान ने होरमुज़ जलडमरूमध्य को घेराबंदी में लेने की कोशिश की है। यह जलडमरूमध्य तेल

आपूर्ति के लिए जीवनरेखा है, क्योंकि दुनिया के कुल तेल परिवहन का लगभग 20 प्रतिशत इसी रास्ते से गुजरता है। अब तक होरमुज़ जलडमरूमध्य (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेहरान के ट्रैफिक कैमरों को नियंत्रित कर रहा था इज़रायल

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 मार्च। तेहरान में लगे लगभग सभी ट्रैफिक कैमरे कई वर्षों से हैक किए गए थे। और जब वरिष्ठ ईरानी अधिकारी तेहरान की पाश्चर स्ट्रीट के पास अपने दफ्तरों में पहुँचते थे, तो इज़रायली उन्हें देख रहे होते थे। गत

- ब्रिटेन के एक अखबार, फायनैंशियल टाइम्स ने इसके साथ यह भी खुलासा किया कि इसी वजह से खामनेई मारे गए। रिपोर्ट में कहा गया है कि इज़रायल कई वर्षों से इसी काम में लगा हुआ था।

शनिवार को इसी क्षेत्र पर हुए हमले में खामनेई मारे गए थे। यह खुलासा ब्रिटिश अखबार “फाइनैंशियल” की एक रिपोर्ट में किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, एक कैमरे का कोण विशेष रूप से उपयोगी साबित हुआ, जिसने कड़ी सुरक्षा वाले परिसर (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूर्व विदेश मंत्री दिनेश सिंह की कुर्बानी, प्रमाण है, ईरान के विशेष महत्व का

1994 में पाकिस्तान ने सभी इस्लामिक देशों को लामबंद कर लिया था, कश्मीर में मानवाधिकार हनन के आरोप लगाकर यूएन में भारत के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित करने के लिए

-नेपु मि्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 मार्च। भारत के कुछ वर्गों में यह धारणा जोर पकड़ रही है कि ईरान कभी भारत का सच्चा मित्र नहीं रहा और उसने कभी भारत के साथ खड़े होकर समर्थन नहीं दिया, तो फिर भारत को ईरान के समर्थन में खुलकर आगे आने की क्या आवश्यकता है। यह बात इस संदर्भ में कही जा रही है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामनेई के निधन पर कोई बयान नहीं दिया, और इसे मोदी सरकार द्वारा सामान्य माना जा रहा है।

लेकिन यह असली कहानी नहीं है। असल में अप्रैल 1994 में पाकिस्तान ने ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन (ओआईसी) के सदस्य देशों को अपने एक प्रस्ताव के समर्थन में एकजुट कर लिया था, जिन्हें वह संयुक्त राष्ट्र में भारत के

- तत्कालीन विदेश मंत्री दिनेश सिंह को, जो गंभीर रूप से बीमार थे, रोग शैया से उठाकर व्हील चेयर पर बिठाकर, हवाई जहाज से सीधे ईरान भेजा गया, ईरान को इस्लामिक संगठन के इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने से रोकने के लिए।
- दिनेश सिंह ने तत्कालीन प्र.मंत्री नरसिम्हाराव का विशेष पत्र, ईरान के शीर्षस्थ नेता को व्यक्तिगत रूप से पेश किया।
- ईरान ने प्र.मंत्री राव की “रिक्वैस्ट” की गंभीरता को समझते हुए, इस्लामिक देशों के संगठन के आरोप पत्र पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया और इस्लामिक देशों के संविधान के अनुसार, जब तक सभी सदस्य किसी भी ऐसे प्रस्ताव को सर्व सम्मति से पारित नहीं करते, वह प्रस्ताव क्रियान्विति के लिए यूएन को नहीं दिया जा सकता था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत और चीन ने खामनेई की मौत की निंदा क्यों नहीं की?

दोनों देशों ने इस मामले पर बहुत संयमित और नपी तुली प्रतिक्रिया दी है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 मार्च। सप्ताहांत में अमेरिका-इज़राइल के हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद भारत में तीखी राजनीतिक बहस छिड़ गई है। विपक्ष ने इस पर सरकार से औपचारिक बयान जारी करने की मांग की है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने अब तक संयमित चुप्पी बनाए रखी है और किसी बयान के बजाय, क्षेत्रीय तनाव बढ़ने के बीच संयम बरतने और “डी-एस्केलेशन” की अपील की है। सूत्रों के अनुसार, यह रुख अधिकांश प्रमुख वैश्विक शक्तियों की प्रतिक्रिया के अनुरूप है।

चीन के ईरान के साथ गहरे ऊर्जा संबंध अचानक कड़ी निगरानी में आ गए हैं, क्योंकि अमेरिकी और इज़रायली हमलों ने तेहरान को खुली टकराव की स्थिति में ला खड़ा किया है और उन तेल

- भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयम बरतने और बातचीत कर समाधान करने की बात कही और चीन ने भी युद्ध की निंदा की तथा युद्ध विराम लागू करने की मांग की।
- चीन के ईरान के साथ गहरे ऊर्जा संबंध हैं और इस टकराव से तेल आपूर्ति के रास्ते बाधित हो गए हैं, जिन पर चीन की अर्थव्यवस्था निर्भर है।
- लेकिन अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं की बात करें तो जी-7 के किसी भी देश ने खामनेई की मौत पर शोक नहीं जताया तथा कई अन्य देशों की तरफ से खामनेई को “ईविल” व्यक्ति बताया जा रहा है।

आपूर्ति मार्गों को खतरे में डाल दिया है, जिन पर चीनी अर्थव्यवस्था निर्भर है।

बीजिंग ने हमलों की निंदा और युद्धविराम की अपील की है, लेकिन उसने ऐसी कोई आर्थिक जवाबी कार्रवाई नहीं की है, जो उसकी ऊर्जा आपूर्ति को जोखिम में डाल दे, जिस पर

वह निर्भर है।

बीजिंग के लिए सबसे खतरनाक कारक होर्मुज़ जलडमरूमध्य है। चीन के लगभग 44 प्रतिशत तेल आयात विस्तृत पश्चिम एशिया क्षेत्र से आते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दुबई एयरपोर्ट पर उड़ानों की संख्या 1200 से 20 हुई

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 मार्च। पश्चिम एशिया के रास्ते हवाई यात्रा इस समय अभूतपूर्व अव्यवस्था का सामना कर रही है। हवाई क्षेत्र व्यापक रूप से बंद हो जाने के कारण उड़ानों का निरस्तीकरण, मार्ग परिवर्तन

- फ्लाइट ट्रेडर 24 द्वारा ये आंकड़े जारी किए गए और कहा गया, यह भारी गिरावट ईरान अटैक के कारण आई है।

और यात्रियों में भारी अनिश्चितता की स्थिति पैदा हो गई है। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले हवाई अड्डों में दुनिया के सबसे व्यस्त विमानन केंद्रों में दुबई इन्टरनेशनल एयरपोर्ट भी शामिल है, जो लगभग ठप हो गया है।

क्षेत्रीय तनाव बढ़ने के साथ ही, कई देशों ने अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 मार्च। लोगों के मन में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या पश्चिम एशिया का युद्ध दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की ओर ले जा रहा है। इसका सीधा जवाब यह है कि हालांकि तनाव बढ़ने का खतरा निश्चित रूप से बढ़ गया है, लेकिन मौजूदा संघर्ष अभी उन परिस्थितियों तक नहीं पहुँचा है, जो आमतौर पर किसी वैश्विक युद्ध को परिभाषित करती हैं।

इस समय टकराव का केन्द्र अमेरिका, इज़रायल और ईरान है। यह संघर्ष तीव्र है, इसमें उन्नत हथियारों का इस्तेमाल हो रहा है, और इसने ग्लोबल एनर्जी मार्केट और हवाई सेवाओं को प्रभावित कर दिया है। लेकिन विश्व युद्ध के लिए कुछ और भी जरूरी होता है:

क्या विश्व तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ रहा है?

हालांकि, युद्ध बढ़ने की संभावना से इंकार नहीं है, पर, अभी भी कई बड़े देश इसमें सीधे शामिल नहीं हुए हैं, इसलिए अभी कुछ गुंजाइश बाकी है

- अगर, चीन और रूस इसमें ईरान की तरफ से मैदान में उतरते हैं और नाटो देशों को भी युद्ध में घसीट लिया जाता है, तो हालात नाटकीय रूप से बदल जाएंगे, पर, अभी तक बीजिंग और मॉस्को ने कूटनीतिक रूख ही प्रकट किया है।
- अस्सी के दशक के ईरान-इराक युद्ध, सन् 1991 में अमेरिका की इराक में घुसपैठ महाशक्तियों के टकराव का रूप नहीं ले सकी, यहाँ तक सीरियाई गृह युद्ध भी विश्व युद्ध का रूप ले सकता था, पर ऐसा नहीं हुआ।
- आज की अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था अच्छी तरह से जानती है कि परमाणु ताकतों की भिड़त का कितना भारी दुष्परिणाम हो सकता है।
- इसके अलावा आर्थिक रूप से परस्पर सहनिर्भरता भी एक बड़ा कारण है, जो तीसरे विश्व युद्ध की संभावना को हतोत्साहित करती है। महाशक्तियां जानती हैं कि लम्बे युद्ध से तेल का प्रवाह रुकेगा, ट्रेड रूट नष्ट होंगे और फायनैंशियल मार्केट तबाह हो जाएगा।

कई बड़ी शक्तियों का अलग-अलग क्षेत्रों में एक-दूसरे से सीधा मिलिटरी संघर्ष। यह लिमिट अभी पार नहीं हुई है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या अन्य बड़ी शक्तियाँ सैन्य रूप से

इस संघर्ष में प्रवेश करेंगी। यदि चीन या रूस जैसे देश ईरान के समर्थन में सीधे (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

खामेनेई का अंतिम संस्कार कार्यक्रम स्थगित

तेहरान, 04 मार्च। तेहरान में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम दर्शन का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है। उनका अंतिम संस्कार कब किया जाएगा, इसकी नई तारीख की घोषणा जल्द की जाएगी। ईरान की तसनीम समाचार एजेंसी के

- इस कार्यक्रम में भारी भीड़ जुटने की संभावना है तथा अमेरिका है कि अमेरिका-इज़रायल इस भीड़ पर हमला कर सकते हैं।

मुताबिक, खामेनेई की वसीयत के मुताबिक, उन्हें ईरान के मशहद शहर में सुपुरई-ए-खाक किया जाएगा। हाल ही में इज़रायल और अमेरिका के हमले में उनकी मौत हो गई थी।

बुधवार को ईरानी टेलीविजन ने बताया कि शहीद इमाम के अंतिम दर्शन समारोह को स्थगित कर दिया गया है (शेष अंतिम पृष्ठ पर)